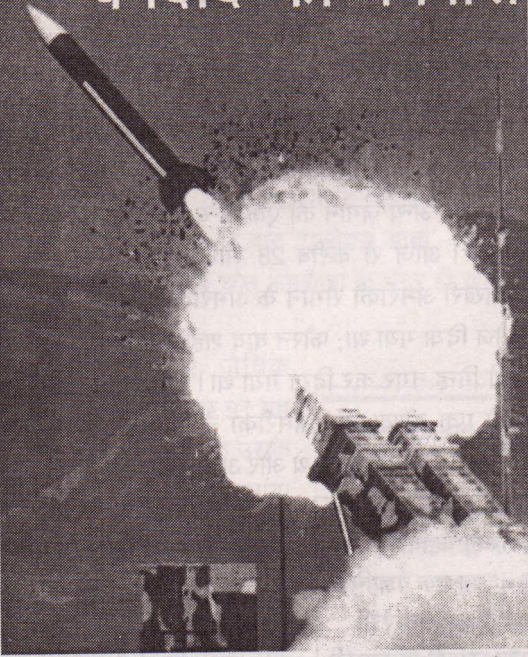


बगदाद की बमबारी बहुत बिगाड़ेगी पर्यावरण



डॉ. ओ.पी. जोशी व डॉ. जयश्री सिक्का

वाली गैस है। पिछले 30-40 वर्षों में वायुमंडल में इसकी मात्रा 360 से 380 पीपीएम तक बढ़ गई है। पिछले युद्ध में विभिन्न सामरिक कार्यों से आधा अरब टन कार्बन डाय ऑक्साइड वायुमंडल में समाई थी। सल्फर डाय ऑक्साइड अम्लीय वर्षा के लिए जिम्मेदार एक प्रमुख गैस है। इस गैस के अणु वायुमंडल में 40 घण्टे तक सक्रिय रहते हैं। अम्लीय वर्षा वायु की गति एवं दिशा पर काफी निर्भर रहती है। अध्ययन दर्शाते हैं कि इंग्लैण्ड में पैदा धुएं के कारण स्वीडन में अम्लीय वर्षा होती है। अम्लीय वर्षा पूरे इकोसिस्टम पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

1991 में खाड़ी युद्ध के समय दक्षिण कोरिया के पर्यावरण मंत्रालय द्वारा जारी रिपोर्ट में बताया गया था कि एक महीने चलने वाली लड़ाई में और तेल कुओं में आग लगने से 30 अरब बैरल तेल जलेगा जिससे 18 लाख टन सल्फर डाय ऑक्साइड, डेढ़ लाख टन धूल एवं चार करोड़ टन कार्बन पैदा होगा। कार्बन कणों के कारण पृथ्वी तक प्रकाश पहुंचने की तीव्रता भी कम होगी एवं इससे काली वर्षा भी सम्भावित है। खाड़ी वर्षा के दौरान काले धुएं के कारण बाहरीन का तापमान सामान्य से सात डिग्री नीचे गिर गया था एवं गुलमर्ग में भी कई स्थानों पर काले धब्बे दिखाई दिए थे। 1991 से ही ईरान के दक्षिण प्रांत बशैर में 22 जनवरी की रात 10-15 मिनट तक काले तेल समान चिपचिपा पानी बरसा था।

तेल के कुओं की आग वायु प्रदूषण के साथ-साथ आंधी एवं भूकम्प जनक भी हो सकती है। आग से आसपास का तापमान लगभग 160 डिग्री फेरनहाइट से भी अधिक होगा जिससे वायु गर्म व हल्की होकर अन्य स्थानों पर जाएगी एवं अन्य स्थानों की वायु जलते तेल कुओं के आसपास स्थानांतरित होगी। इस प्रकार तेज़ आंधियां बढ़ेंगी। कुओं की आग से पृथ्वी से घर्षण पैदा होगा। इस घर्षण एवं आंतरिक दबाव से यदि चट्टानें प्रभावित होती हैं तो भूकम्पनीयता

इराक-अमरीका की लड़ाई पर्यावरण के लिए काफी हानिकारक है। इससे वायु, जल, शोर व रेडियोधर्मी प्रदूषण की समस्या पैदा हो जाएगी जो वन विनाश को भी बढ़ावा देगी। इस लड़ाई में जारी बमबारी एवं तेल कुओं की आग से निकला धुआं पर्यावरण को काफी हानि पहुंचाएगा। यह धुआं वायुमंडल में कितनी ऊंचाई तक पहुंचेगा उस पर इसका प्रभाव निर्भर रहेगा। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार यदि धुआं 50 कि.मी. की ऊंचाई पर समताप मण्डल (स्ट्रेटोस्फीयर) तक पहुंचता है तो इसके प्रभाव विश्वव्यापी होंगे एवं मानसून भी प्रभावित होगा। धुएं के 20 कि.मी. की ऊंचाई पर परिवर्ती मण्डल (ट्रोपोस्फीयर) में पहुंचने पर स्थानीय स्तर पर प्रभाव अधिक होगा।

धुएं में कई प्रकार की जहरीली गैसों (कार्बन डाय ऑक्साइड एवं कार्बन मोनो ऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड्स, सल्फर डाय ऑक्साइड), हाइड्रोकार्बन एवं कार्बन के कण भी कालिख के रूप में पाए जाते हैं। कार्बन डाय ऑक्साइड एक प्रमुख ग्रीन हाउस प्रभाव पैदा करने

